

क्रिया

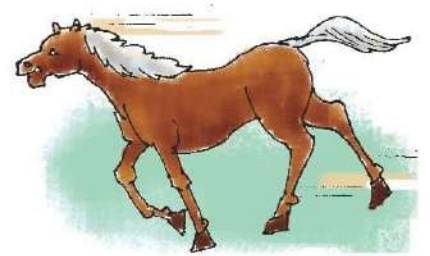
जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे- (क) बच्चे लिख रहे हैं।

(ख) घोड़ा दौड़ रहा है।

(ग) वह घर जा रहा है।

(घ) गाय चर रही है।



ऊपर लिखे वाक्यों में 'लिख रहे हैं', 'दौड़ रहा है', 'जा रहा है', 'चर रही है' शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चलता है। ऐसे शब्दों को **क्रिया** कहते हैं।

किसी भी भाषा के वाक्य में क्रिया का होना अनिवार्य है। यदि वाक्य में क्रिया न हो तो वह वाक्य अधूरा माना जाता है। अतः वाक्य में क्रिया का होना आवश्यक होता है।

धातु - क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। जैसे- आ, जा, पढ़, लिख आदि।

मूल धातु

क्रिया के रूप

आ -

आना, आता, आया, आओ, आ रहा, आएगा।

पढ़ -

पढ़ना, पढ़ा, पढ़ो, पढ़ रहा, पढ़ चुका, पढ़ूँगा।

क्रिया के भेद

क्रिया के दो भेद होते हैं- 1. सकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया

1. सकर्मक क्रिया - जहाँ कर्ता के काम करने का प्रभाव कर्म पर पड़ता है, उसे **सकर्मक क्रिया** कहते हैं।

(क) मोहन भोजन खाता है।

(ख) अनिता पत्र लिखती है।

(ग) राम घर जा रहा है।



सर्वनाम

जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं।

चित्र देखकर उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए।



गोपी किसान है।

गोपी फसल लेकर जा रहा है।

गोपी किसान है।

वह फसल लेकर जा रहा है।



लता एक लड़की है।

सूरज **लता का** भाई है।

लता एक लड़की है।

सूरज **उसका** भाई है।



नीति और रुही सहेलियाँ हैं।

नीति और रुही बातें कर रही हैं।

नीति और रुही सहेलियाँ हैं।

वे बातें कर रही हैं।



कुत्ता बहुत भूखा था।

कुत्ते को खाने को कुछ नहीं मिला।

कुत्ते बहुत भूखा था।

उसे खाने को कुछ नहीं मिला।